राज्य अध्याय 46

1	**प्रार्थना**

समूह का अगुवा। परमेश्वर के आत्मा के माध्यम से, उसकी उपस्थिति के बारे में जागरूकता प्राप्त करने और उसकी आवाज़ सुनने के लिए उसके मार्गदर्शन हेतु ***प्रार्थना करें।*** अपने समूह और परमेश्वर के राज्य का प्रचार करने से सम्बंधित इस पाठ को प्रभु के हांथों में सौंपे।

2	**साझा करें** (20 मिनट) ***[शांत समय]*** **दानिय्येल 7,8,9 और 12**

अपनी बारी आने पर संक्षेप में ***साझा करें (या*** अपने नोट्स से ***पढ़ें)*** कि अपने दिये गये अनुच्छेद (दानिय्येल 7,8,9 और 12) से शान्त समय में क्या सीखा। अगर कोई अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें। मुख्य बातों को लिखें।

3	**स्मरण करें** (5 मिनट) ***[रोमियों में प्रमुख वचन]*** **(19) रोमियों 13:14**

दो-दो करके ***पुनरावलोकन करें।***

(19) रोमियों 13:14. वरन प्रभु यीशु मसीह को पहिन लो, और शरीर की अभिलाषाओं को पूरा करने का उपाय न करो।

4	**बाइबल अध्ययन** (85 मिनट) ***[रोमियों की पत्री]*** **रोमियों 15:1-33**

परिचय। एक साथ मिलकर **रोमियों 15:1-33** का अध्ययन करने के लिये बाइबल अध्ययन के पाँच चरणों वाली विधि का प्रयोग करें।

रोमियों 15:1-6 मसीहियों के सम्बन्ध में मसीही के कर्तव्य को सिखाना जारी रखता है जिनका विश्वास कमज़ोर या मज़बूत है। रोमियों 15:7-13 अन्य जातीय समूहों के संबंध में मसीही के कर्तव्य को सिखाता है। और रोमियों 15:14-33 प्रेरित पौलुस की सेवकाई, नीति और योजनाओं का वर्णन करता है।

कदम 1. पढ़ें। **परमेश्वर का वचन**

आइये एक साथ मिलकर रोमियों 15:1-33 तक पढ़ें।

आइये हम में से हर एक जन एक-एक वचन करके अनुच्छेद खत्म हो जाने तक पढ़ें।

कदम 2. खोजें। **अवलोकन**

ध्यान दें। इस अनुच्छेद में निहित कौन सी सच्चाई आपके लिए महत्वपूर्ण है?

या इस अनुच्छेद के किस सत्य या प्रकाशन ने आपके मन या हृदय को छूआ?

लेखा। प्राप्त एक या दो प्रकाशनों को लिख लें। उस पर विचार विमर्श करें और अपने विचारों को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें।

साझा करें। (जब समूह के सदस्य आपस में दो मिनट विचार या लिख लें, तो उसे लोगों के साथ जरूर साझा करें) आइये हम बारी बारी एक दूसरे को बताएं कि हमने क्या सीखा है।

(याद रखें: हर एक छोटे समूह में, समूह के सभी सदस्य अलग बातों को साझा करेंगे)

15:1-6

खोज 1. **मज़बूत मसीही कमज़ोर मसीहियों की असफलताओं को सँभालने के लिए जिम्मेदार हैं।**

पौलुस मसीहियों के विश्वास के विषय में बोलना जारी रखता है जो कमज़ोर या मज़बूत हैं। इस संदर्भ में, इसका अर्थ है कि उद्धार के लिए यीशु मसीह के प्रति यह उनका विश्वास नहीं है, परन्तु उनका विश्वास या उन चीजों के विषय में आस्था है जिनकी बाइबल में आज्ञा, निषिद्ध या शिक्षा नहीं है, परन्तु जिनके विषय में मसीही अलग राय रखते हैं! यह तथ्य कि कमज़ोर मसीही उन चीज़ों के विषय में संदेह रखते हैं जिन पर मज़बूत मसीही विश्वास रखते हैं और करते हैं, रिश्तों में तनाव और घर्षण पैदा कर सकता है। इसलिए, मज़बूत मसीहियों को इस बात के लिए समझाया जाता है कि वे कमज़ोर मसीहियों के संदेहों के विरुद्ध प्रतिक्रिया न करें, बल्कि उनको सहते रहें।

(1) मसीहियों को अपने भले के लिए अपने पड़ोसियों को प्रसन्न करना चाहिए, ताकि उनका निर्माण हो सके।

"खुश करने" का अर्थ है दयावान होना और वह करना जिसे कमज़ोर मसीही अनुमोदित करता है और वह न करना जिसकी वह निंदा करता हैं। हालाँकि, इसका अर्थ यह नहीं समझा जाना चाहिए कि मज़बूत मसीही हमेशा कमज़ोर मसीहियों की सनकी बातों और इच्छाओं को पूरा करते रहेंगे और इस प्रकार हमेशा वह काम करते रहेंगे जो कमज़ोर मसीहियों को प्रसन्न करता है! किसी और को खुश करना मसीही के जीवन का एक पूर्ण सिद्धांत नहीं है, क्योंकि गलातियों 1:10 के अनुसार, मसीह के सेवक होने के लिए मसीही लोगों को खुश ही न करता रहे! खुश करने की ज़िम्मेदारी केवल खाने और पीने के मुद्दे और अन्य विवादित (विवादास्पद) मामलों के साथ निपटने वाली स्थिति तक सीमित रहने की है (1 कुरिन्थियों 10: 31,33)। "किसी को खुश करने" का अर्थ है "उसकी भलाई की तलाश करना ताकि वह बच जाए" (1कुरिन्थियों 10:31,33)।

खुश करने की ज़िम्मेदारी शायद उन मामलों को सम्मिलित करने तक के लिए नहीं बढ़ाई जा सकती है जो बाइबल में स्पष्ट रूप से सिखाए गए हैं, परन्तु जिनके विषय में अभी भी कमज़ोर मसीहियों को संदेह हो सकता है! कमज़ोर मसीही बाइबल की स्पष्ट शिक्षाओं का उल्लंघन करके उन्नति नहीं कर सकते हैं! वास्तव में यीशु मसीह की आज्ञाएँ, निषेध और शिक्षा लोगों को वास्तव में स्वतंत्र बनाती है (यूहन्ना 8:31-32)। सत्य उन्नति करता है!

परन्तु कमज़ोर मसीही तब भी उन्नति करते हैं जब मज़बूत मसीही कृपा और स्वेच्छा से विवादित मामलों के क्षेत्र में अपने आचरण को सीमित करते हैं। इस प्रकार, कमज़ोर मसीही विवेक की शांति बनाए रखने में सक्षम होंगे (तुलना करें 1कुरिन्थियों 8:12)।

(2) मसीहियों को मसीह के निस्वार्थ प्रेम के उदाहरण का पालन करना चाहिए।

जब मसीह पृथ्वी पर आया, तो उसने परमेश्वर को अस्वीकार करने वालों की भर्त्सना और शत्रुता को लिया (तुलना करें यूहन्ना 10:20; मत्ती 10:24-25)। इसलिए, मसीहियों को उसके पद चिन्हों पर चलना चाहिए और विवादित मामलों के विषय में साथी-मसीहियों के संदेह को सहन करना चाहिए।

हालाँकि, मसीह ने क्या किया और मज़बूत मसीहियों को क्या करने का आग्रह किया जाता है, इसके बीच एक अंतर है। मसीह ने स्वयं को खुश नहीं किया और उसने *परमेश्वर के विरुद्ध गैर-मसीहियों की भर्त्सना और शत्रुता* को सहन करने की अतुलनीय सीमा तक ऐसा किया। मज़बूत मसीहियों से केवल *अपने साथी-मसीहियों के विवादित मामलों के विषय में संदेहों* को सहने का आग्रह किया गया है। यदि मसीह ने सबसे बड़ा और सबसे कठिन काम किया, तो क्या मज़बूत मसीहियों को उससे कहीं छोटा और सरल काम नहीं करना चाहिए?

पुराने नियम में अतीत में मसीह के इस उदाहरण की पहले से ही भविष्यद्वाणी की गई थी (भजन 69:9)। इसी प्रकार, "अतीत में लिखी गई हर बात हमें सिखाने के लिए लिखी गई थी"। प्रेरित पौलुस बाइबल की ही बात कर रहा है और किसी अन्य शास्त्र की नहीं! वह कहता है कि बाइबल का व्यक्त उद्देश्य है:

- "चेतावनी देना" (1 कुरिन्थियों 10:6,11)
- "सीखाना, फटकारना, सही करना, प्रशिक्षित करना और धार्मिकता से परिपूर्ण करना" (2 तीमुथियुस 3:16-17)
- वचन में दिए धीरज (यूनानी: हूपोमोनी) और प्रोत्साहन (यूनानी: पैराकलेसिस) के माध्यम से आशा देना। (रोमियों 15:4)।

और पौलुस कहता है कि परमेश्वर स्वयं "धीरज और प्रोत्साहन देनेवाला परमेश्वर है" (रोमियों 15:5)। परमेश्वर के वचन, बाइबल और परमेश्वर के बीच घनिष्ठ संबंध पर ध्यान दें! बाइबल परमेश्वर का स्थायी वचन है और इसलिए परमेश्वर का जीवित वचन है। परमेश्वर बाइबल के द्वारा लोगों को प्रोत्साहन और आराम देता है।

15:7-13

***खोज 2*. कलीसिया में यहूदियों और अन्यजातियों को एक दूसरे को स्वीकार करना चाहिए, क्योंकि यीशु मसीह दोनों जातीय समूहों के लोगों को बचाने के लिए आया था।**

रोमियों 15:7-8 कहता है, "जैसा मसीह ने परमेश्वर की महिमा के लिये तुम्हें ग्रहण किया है, वैसे ही तुम भी एक दूसरे को ग्रहण करो। इसलिये मैं कहता हूँ कि जो प्रतिज्ञाएँ बापदादों को दी गई थीं उन्हें दृढ़ करने के लिये मसीह, परमेश्वर की सच्चाई का प्रमाण देने के लिये, खतना किए हुए लोगों का सेवक बना।" मसीही कलीसिया में यहूदियों और अन्यजातियों को एक दूसरे को स्वीकार करना चाहिए क्योंकि यीशु मसीह यहूदियों और अन्यजातियों (गैर-यहूदियों) को बचाने के मुख्य उद्देश्य से आया था! और क्योंकि पृथ्वी पर परमेश्वर की महिमा दांव पर है!

यहूदियों और अन्यजातियों के बीच इस अंतर का अर्थ यह नहीं है कि यहूदी कमज़ोर मसीही थे और अन्यजाति मज़बूत मसीही थे। कमज़ोर और मज़बूत मसीहियों के समूह अच्छी रीति से दोनों नस्लीय समूहों से तैयार किए गए हो सकते हैं। ऐसे यहूदी और यहूदी मत को अपनाए हुए भी थे, जिनको औपचारिक व्यवस्था की पृष्ठभूमि के कारण संदेह थे। और गैर-यहूदी भी थे, जिनको अन्यजाति मूर्तिपूजा में पृष्ठभूमि होने के कारण संदेह थे। हालाँकि इस अंतर ने इस आवश्यकता पर बल दिया कि यहूदी पृष्ठभूमि से मसीही और अन्यजातियों की पृष्ठभूमि से मसीही रोम की कलीसिया के भीतर एक दूसरे को स्वीकार करें।

(1) यीशु मसीह यहूदियों के लिए आया।

रोमियों 15:8 का शाब्दिक अर्थ है कि मसीह "खतना किए हुओं का सेवक बन गया", अर्थात वह खतना करवाए हुए लोगों के लिए सेवक बन गया (रोमियों 4:12)। यह "शरीर के भाव से इस्राएली" (1 कुरिन्थियों 10:18) या इस्राएल के जातीय या राष्ट्रीय नागरिकों के लिए पद्य है। "यीशु मसीह पूर्वजों से किए गए वादों की पुष्टि करने के लिए सत्य की ओर से यहूदियों का सेवक बन गया"। इस प्रकार, यीशु मसीह अब्राहम, इसहाक और याकूब के साथ की गई वाचा को स्थापित करने और उसे लागु करने के लिए आया था, वह वाचा जो परमेश्वर की शपथ के साथ प्रमाणित थी (तुलना करें। इब्रानियों 6:16-18)।

वाचा का वादा यह था कि परमेश्वर अब्राहम के एक वंशज (इब्रानी: बीज) के माध्यम से दुनिया में सभी देशों को आशीष देगा (उत्पत्ति 22:18), अर्थात् यीशु मसीह (गलातियों 3:16)। और पुराने नियम के काल में उस वाचा का चिन्ह और मुहर खतना था (उत्पत्ति 17:1-21; रोमियों 4:11)। परमेश्वर ने अपने वचन को पूरा करने की शपथ प्रतिज्ञा के साथ की थी। परमेश्वर की विश्वासयोग्यता विफल नहीं हो सकती है और इसलिए यीशु मसीह इसकी पुष्टि करने आया और परमेश्वर की विश्वासयोग्यता को प्रभावी करने के लिए आया था (मत्ती 26:54)। इस प्रकार, यीशु मसीह "पहले यहूदियों के लिए आया" (मत्ती 10:5-6; रोमियों 1:16)! इसके बाद, "उद्धार यहूदियों से बाहर गया" (मत्ती 15:24; यूहन्ना 4:22) दुनिया के सभी अन्यजातियों के देशों में (मत्ती 24:14; 28:19; तुलना करें यशायाह 2:2-3) ।

(2) यीशु मसीह अन्यजातियों के लिए भी आया।

यीशु मसीह यहूदियों के पास आया था, न केवल यहूदियों के लिए, बल्कि अन्यजातियों के लिए भी (तुलना करें यशायाह 9:2; 42:6; 49:6) । यहूदियों के लिए यीशु मसीह के माध्यम से मसीह की दया ने यीशु मसीह के माध्यम से अन्यजातियों के लिए परमेश्वर की दया का नेतृत्व किया।

रोमियों अध्याय 11 ने पहले से ही परमेश्वर के प्रतिमान में अन्यजातियों और यहूदियों की पारस्परिक निर्भरता को सिखाया। मसीह पहले इस्राएल के जातीय या प्राकृतिक राष्ट्र और फिर दुनिया में जातीय या प्राकृतिक राष्ट्रों के लिए वाचा को लागु करने के लिए आया था। यीशु मसीह ने यह "पूर्वजों से किए गए वादे की पुष्टि करने के लिए किया था ताकि अन्यजातिपरमेश्वर को उसकी दया के लिए महिमा दे सकें, जैसा कि लिखा गया है" पुराने नियम में। पुराने नियम के चार उद्धरणों के साथ, प्रेरित पौलुस यह पुष्टि करता है कि मसीह के यहूदियों के बीच आने का एक प्रतिमान धरती पर अन्यजातियों के राष्ट्रों को उद्धार देना था!

- 2शमूएल 22:50 और भजन 18:49। "इसलिये, इस कारण मैं जाति जाति के सामने तेरा भजन गाऊँगा, और तेरे नाम का भजन"
- व्यवस्थाविवरण 32:43, "हे जाति जाति के लोग, उसकी प्रजा के साथ आनन्द मनाओ।"
- भजन 117:1, "हे सब जाति के जाति के सभी लोग, यहोवा की स्तुति करो।"
- यशायाह 11:10; प्रकाशितवाक्य 5:5; 22:16, "उस समय यिशै की जड़ देश देश के लोगों के लिये एक झण्ड़ा होगी; सब राज्यों के लोग उसे ढूंढ़ेंगें।" पुराने नियम का यूनानी अनुवाद कहता है, "और वह जो अन्यजातियों पर शासन करने के लिए उठेगा; उसमें अन्यजाति भरोसा करेंगे" या बेहतर: "उसमें अन्यजाति विश्वास करेंगे"। मसीहा, यीशु मसीह, अन्यजाति राष्ट्रों पर शासन करेगा और अन्यजाति राष्ट्र उसमें विश्वास करेंगे और इस अपेक्षा के साथ कि पुराने नियम में परमेश्वर के वादों को पूरा किया जाएगा (रोमियों 15:12-13; इब्रानियों 11:1; तुलना करें 2 कुरिन्थियों 1:20) ।

कदम 3. प्रश्न। **व्याख्या**

ध्यान दें। आप इस समूह से इस अनुच्छेद के आधर पर कौन सा प्रश्न पूछ सकते हैं?

आइये रोमियों 15:1-33 में पायी जाने वाली सच्चाइयों को समझने का प्रयास करें और उन बातों के बारे में प्रश्न पूछें जो हम अभी तक नहीं समझते।

लिखें: अपने प्रश्नों को जितना सम्भव हो स्पष्ट रूप दें। फिर उसे अपनी नोटबुक में लिखें।

साझा करें: (समूह के सभी लोग जब दो मिनट सोच विचार करके लिख चुके हों तो, होनें दे कि पहले हर सदस्य अपना प्रश्न साझा करें।)

चर्चा करें। (उसके पश्चात अपने समूह में एक साथ मिलकर कुछ प्रश्नों को चुनकर उन पर चर्चा करें।)

(नीचे विद्यार्थियों द्वारा पूछे जाने वाले प्रश्नों पर चर्चा करने पर प्राप्त विचारों के नोट्स के उदाहरण दिये गये हैं।)

15:14-19ख

प्रश्न 1. पौलुस की सेवकाई की कुछ विशेषताएँ क्या हैं?

ध्यान दें।

पौलुस की सेवकाई को प्रोत्साहन, अनुस्मारक और विनम्रता के द्वारा अन्य चीजों में चिह्नित किया गया था।

(1) प्रोत्साहित करने वाला पौलुस (रोमियों 15:14)।

प्रेरित पौलुस सवयं कई विशेषताओं वाला व्यक्ति था। उसने अन्य मसीहियों की ताकत और क्षमताओं को भी पहचाना। उनकी कमजोरियों और असफलताओं को चुनने के बजाय, उसने उनकी ताकत और उपलब्धियों से उन्हें प्रोत्साहित किया! रोमियों 1:8,12 में, उसने पहले ही उनके विश्वास के लिए उनकी सराहना कर दी। अब रोमियों 15:14 में उसने यह कहकर उनका हौसला बढ़ाया कि वे "अच्छाई से परिपूर्ण, ज्ञान में पूर्ण और एक दूसरे को निर्देश देने के लिए सक्षम हैं"।

अच्छाई वह सद्गुण है जो सारी दुष्टता और बुराई के विरुद्ध है। इसमें हृदय की स्पष्टता और दयालुता और सक्रिय रूप से लोगों का भला करना सम्मिलित है। अच्छाई वह गुण है जो कमज़ोर मसीहियों को नुकसान पहुँचाने से रोकने के लिए मज़बूत मसीहियों को विवश करेगा।

ज्ञान वह गुण है जो मसीही विश्वास को समझता है। यह मसीही विश्वास में दूसरों को निर्देश देने की क्षमता से संबंधित है। यहाँ यह विशेष रूप से इस बात के ज्ञान का सन्दर्भ है कि यीशु मसीह के माध्यम से "पुराने नियम की छायाएँ" नए नियम की वास्तविकताओं में कैसे पूरी हुईं (कुलुस्सियों 2:17; इब्रानियों 10:1)। इस प्रकार ज्ञान वह गुण है जो रोम में मसीहियों के बीच विवादित मामलों के विषय में विश्वास की कमजोरी को ठीक करेगा। इस प्रकार, रोमियों 14:1 से 15:13 में राय, आस्थाओं या विश्वास के अंतर काल्पनिक नहीं थे। रोम में, अवश्य इस पर शिक्षण की आवश्यकता की स्थिति रही होगी।

एक दूसरे को निर्देश देने की क्षमता वह गुण है जिसका एक दूसरे पर गहरा प्रभाव होता है। एक दूसरे को निर्देश देने का शाब्दिक अर्थ है "एक दूसरे के दिमाग में डालना (उत्कीर्ण करना") (यूनानी: नाओफेतेओ)। रोम के मसीहियों में विवादित मामलों पर अलग-अलग राय या आस्था रखने के लिए एक-दूसरे का न्याय न करने या निंदा न करने की चेतावनी देने की क्षमता थी। उनके पास एक दूसरे को प्रेम करने और विश्वास को बनाने की आवश्यकता को लेकर दूसरों के दिमागों पर लगातार

प्रभाव डालने की क्षमता थी।

(2) स्मरण कराने वाला पौलुस (रोमियों 15:15-16)।

प्रेरित पौलुस ने रोम के मसीहियों को स्मरण दिलाया कि परमेश्वर ने उसे अनुग्रह दिया था कि "वह अन्यजातियों के लिए याजक की सेवकाई के साथ मसीह के सुसमाचार का प्रचारक बने ताकि अन्यजाति पवित्र आत्मा द्वारा पवित्र किए गए परमेश्वर के लिए स्वीकार्य भेंट बन सकें।" यहूदियों के लिए पौलुस अपनी सेवकाई का वर्णन करने हेतु पुराने नियम के चित्रों का उपयोग करता है। वह विशेष रूप से अन्यजाति राष्ट्रों को सुसमाचार प्रचार को वेदी पर बलिदान लाने वाले एक याजक की पवित्र (अलग और समर्पित) सेवा के रूप में मानता है। इस चित्र में, अन्यजातियों को जो मसीही बन गए हैं, परमेश्वर को स्वीकार्य भेंट के रूप में माना जाता है।

पौलुस के समय से 700 वर्ष पहले से ही, भविष्यद्वक्ता यशायाह ने भविष्यद्वाणी की थी कि परमेश्वर "उनमें से कुछ को जो जीवित रहेंगे (अर्थात, यहूदियों में से कुछ जो बाबुल के निर्वासन में चले गए थे) राष्ट्रों के लिए भेजेगा (यशायाह 1:9; 10:20-23) (अर्थात, अन्यजातियों राष्ट्रों में जिन्होंने कभी बाइबल के परमेश्वर के विषय में नहीं सुना होगा या कभी परमेश्वर की महिमा नहीं देखी होगी, उदाहरण के लिए उसके चमत्कार)। ये यहूदी अन्यजाति राष्ट्रों में परमेश्वर की महिमा की घोषणा करेंगे।" अपनी बारी में, "वे (अर्थात, विश्वास करने वाले अन्यजाति या मसीही) सभी राष्ट्रों के अन्य यहूदियों को यहोवा को भेंट के रूप में लाएँगे" (यशायाह 66:19-21)[13]! इस प्रकार, पहले से ही 700 वर्ष पहले भविष्यद्वक्ता यशायाह ने भविष्यद्वाणी की थी कि यहूदी और गैर-यहूदी एक-दूसरे की बाइबल के परमेश्वर को जानने में सहायता करेंगे जैसा कि प्रेरित पौलुस रोमियों 11 में सिखाता है। किसी भी भेंट को परमेश्वर के स्वीकार्य होने के लिए, उसे शुद्ध और पवित्र होना चाहिए। पौलुस कहता है कि पवित्र आत्मा पवित्रता की इस स्थिति का निर्माण करता है। पवित्र आत्मा द्वारा पवित्र किए गए (अर्थात, नया जन्म) केवल यहूदी और अन्यजाति बाइबल के परमेश्वर के लिए स्वीकार्य भेंट होंगे।

(3) विनम्र सेवक पौलुस (रोमियों 15:17-19)।

पौलुस अपने आप को इस्राएल के छुड़ाए हुए लोगों में से एक के रूप में संबोधित करता है जिसे यशायाह के समान परमेश्वर की कीर्ति और महिमा का प्रचार करने के लिए भेजा गया है। हालांकि पौलुस ने बहुत से यहूदियों और गैर यहूदियों की मसीह में अगुवाई की थी, लेकिन वह पद 18 में कहता है, "क्योंकि उन बातों को छोड़ मुझे और किसी बात के विषय में कहने का साहस नहीं जो मसीह ने अन्यजातियों की अधीनता के लिए वचन और कर्म और चिन्हों और अद्भुत कामों की सामर्थ्य से और पवित्र आत्मा की सामर्थ्य से मेरे ही द्वारा किये। पौलुस दीन था उसने सेवकाई के क्षेत्र में अपनी साड़ी उपलब्धियों के लिए सारी महिमा यीशु मसीह को दी। महत्वपूर्ण वह नहीं था जो कि पौलुस ने मसीह के माध्यम से किया था, परन्तु यह जो कि मसीह ने पौलुस के माध्यम से जो पूरा किया (तुलना करें प्रेरितों 14:27)! सुसमाचार का प्रचार और कई लोगों को मसीह की ओर ले आना, पौलुस का काम नहीं था, बल्कि मसीह का था!

यीशु मसीह ने पौलसु के वचनों और कार्यों के माध्यम से काम किया। पौलुस के वचनों और कार्यों के पीछे "चिन्हों और चमत्कारों की शक्ति" (यूनानी: डूनामिस समईओन काई तेरातोन) और पवित्र आत्मा की शक्ति (यूनानी: डूनामिस) थी। एक "चमत्कार" (यूनानी: सेमेऑन) केवल एक अद्भुत कार्य, कोई अद्भुत घटना (2 कुरिन्थियों 12:12; गलातियों 3:5; इब्रानियों

[13] यहूदियों को शारीरिक रूप से मध्य पूर्व में स्थित इस्राएल की भूमि पर वापस लाना नहीं! परन्तु यहूदियों को आत्मिक रूप से यीशु मसीह में विश्वास में लाना!

2:4) नहीं है, परन्तु यह विशेष रूप से अलौकिक अभिकरण की ओर संकेत करते हुए एक विशिष्ट चिन्ह है जिसके द्वारा यह होता है और इस प्रकार अपने अलौकिक चरित्र को प्रमाणित करता है। चिन्ह जो प्रेरित पौलुस ने किए, उन्होंने यीशु मसीह को प्रतिनिधि के रूप में इंगित किया, जिसने इन्हें संभव किया। इन चिन्हों ने प्रमाणित किया कि यीशु मसीह ने अपने प्रेरित के रूप में पौलुस को भेजा था (तुलना करें व्यवस्थाविवरण 34:17; मरकुस 16:20; प्रेरितों 2:43; 2 कुरिन्थियों 12:12; इब्रानियों 2:4)!

पौलुस ने कहा कि उसने पवित्र आत्मा की शक्ति के माध्यम से अपने चमत्कार किए। जब भी वह सुसमाचार के उद्धार के प्रभावों की बात करता था तो पवित्र आत्मा का उल्लेख करना पौलुस की विशेषता थी। पवित्र आत्मा के काम करने और यीशु मसीह (रोमियों: 9:11-9; 2कुरिन्थियों 3:17,18) के बीच इस संबंध में कोई अलगाव न करना भी पौलुस की विशेषता थी। पौलुस ने प्रभुत्व के तीन माध्यमों के प्रकाशन (व्यक्तियों) के कार्यों और प्रभुत्व के इन तीन माध्यमों के प्रकाशन (व्यक्तियों) के साथ मसीहियों के विशिष्ट संबंधों के चारों ओर अपनी शिक्षा को बुना है। पौलुस के विचार को त्रिएकता के सिद्धांत द्वारा सशर्त किया गया था (रोमियों 15:30; इफिसियों 4:3-6)।

15:19ख-21

***प्रश्न 2*. पौलुस की नियुक्त सेवा की नीति क्या थी?**

ध्यान दें।

(1) पौलुस ने संक्षेप में बताया कि मसीह ने उसके माध्यम से क्या पूरा किया था।

प्रेरित पौलुस ने "यरूशलेम से इल्लुरिकुस के चारों ओर" सुसमाचार सुनाया। वह अब तक सुसमाचार प्रचार की अपनी सेवकाई की पूर्वी और पश्चिमी सीमाओं का वर्णन करता है (तुलना करें 2तीमुथियुस 4:10)। वह कहता है, "मैंने सुसमाचार का पूरी तरह से प्रचार किया है"। पौलुस का पूरी तरह से का अर्थ यह नहीं था कि उसने उन्हें वह सब कुछ सिखाया जो उन्हें जानने की ज़रुरत थी, जैसा कि उसने इफिसुस में किया था (प्रेरितों 20:20,27), परन्तु इस अर्थ में कि उसने इस पूरे क्षेत्र में सुसमाचार प्रचार का अपना काम पूरा किया। उसका उद्देश्य इस पूरे क्षेत्र में मसीही कलीसियाओं की नींव रखना था (1कुरिन्थियों 3:7,10)। जो कि उसने पूरा किया।

(2) पौलुस नियुक्त सेवा की अपनी व्यक्तिगत नीति की व्याख्या करता है।

वह कहता है, "यह हमेशा से ही वहाँ पर सुसमाचार प्रचार करने की मेरी महत्वाकांक्षा रही है जहाँ मसीह को नहीं जाना जाता था, ताकि मैं किसी और की नींव पर न बनाऊँ।" पौलुस की नीति जिसमें उसकी सेवकाई का संचालन, उसके दायरे और सीमाओं को निर्देशित किया गया था, मसीही कलीसियाओं की नींव रखना और समय-समय पर निम्न के द्वारा अपने स्वयं के काम को मज़बूत करने की थी:

- निरन्तर प्रार्थना करें (1थिस्सलुनिकियों 1:2-3)
- अब और तब भेंट करना
- पत्र लिखना
- सहकर्मी भेजना

उसकी प्रेरित गतिविधि उन कलीसियाओं के निर्माण करने की ओर निर्देशित नहीं थी जो अन्य मसीही श्रमिकों द्वारा स्थापित

की गईं थीं। पौलुस यशायाह 52:15 को उद्धृत करता है, जिसका संदर्भ मसीहा के अपमान के बाद उसकी महिमा के विश्वव्यापी प्रभावों की भविष्यद्वाणी का है (यशायाह 52:14)। अन्यजाति राष्ट्र और राजा उन चीजों को देखेंगे, सुनेंगे और समझेंगे, जिनका उन्होंने पहले कभी नहीं बताया गया था। इस पद्य को उद्धृत करके, पौलुस अन्यजातियों के बीच अपने स्वयं के नियुक्त कार्य सेवकाई के काम को परमेश्वर की योजना के अनुसार आयोजित मानता था और इस प्रकार विशेष रूप से जिसकी वचन के द्वारा माँग की गई थी। फिर भी, पौलुस यह माँग नहीं करता है कि उसकी व्यक्तिगत नियुक्त कार्य सेवकाई की नीति अन्य सभी नियुक्त सेवकाई कार्यकर्ताओं की नियुक्त कार्य सेवकाई नीति होनी चाहिए।

15:22-24

***प्रश्न 3*. पौलुस की भविष्य की यात्रा की क्या योजनाएँ थीं?**

ध्यान दें। यह तथ्य कि प्रेरित पौलुस सबसे पहले उन राष्ट्रों और नगरों में गया था जहाँ अभी तक सुसमाचार का प्रचार नहीं किया गया था, इसी का कारण था कि वह अक्सर रोम आने के लिए बाधित हुआ था। परन्तु अब जब दुनिया के इस भाग में उसका काम पूरा हो गया था, तो उसने दूर पश्चिम जाते हुए रोम का दौरा करने की योजना बनाई। पौलसु की स्पेन यात्रा की योजना निश्चित है। हालाँकि बाइबल हमें यह नहीं बताती है कि क्या उसने कभी स्पेन की यात्रा की थी, "कुरिन्थ को पत्र" जिसे रोम के क्लेमेंट (95 ई.स.) नामक एक कलीसिया के अगुवे ने लिखा था और एक प्राचीन दस्तावेज जिसे "मूराटोरियन टुकड़ा" कहा जाता है (170 ई.स.) बताते हैं कि पौलुस ने स्पेन की यात्रा की थी। पौलुस ने स्पेन के मार्ग में रोम से होकर जाने की योजना बनाई। उसने वहाँ कुछ सेवकाई करने और स्पेन की ओर अपनी यात्रा पर उनके द्वारा सहायता की अपेक्षा की थी। बाइबल में इस बात का प्रमाण है कि अन्य कलीसियाओं ने प्रेरित पौलुस की नियुक्त कार्य सेवकाई की यात्राओं में उसकी सहायता की थी (प्रेरितों 13:1-4; 14:26; 15:40; फिलिप्पियों 4:15-16)।

15:25-29

***प्रश्न 4*. यरूशलेम में गरीबों के लिए पौलुस की क्या सेवकाई थी?**

ध्यान दें। इससे पहले कि वह रोम और स्पेन की यात्रा पर जाता, पौलुस ने यरुशलम और यहूदिया में रहने वाले गरीब मसीहियों के लिए मकदूनिया और अखया की मसीही कलीसियाओं द्वारा दिए दान (वित्तीय उपहार) के साथ पहले यरूशलेम की यात्रा करने की योजना बनाई। दया का यह काम प्रेरित पौलुस की विश्वव्यापी नियुक्त कार्य सेवकाई उद्यम का भाग था। वित्तीय योगदान का शाब्दिक अर्थ "संगती" (यूनानी: कोईनोनिआ) था। यह संगती के बंधन का एक टोकन था जिसका दुनिया के विभिन्न देशों के मसीहियों के बीच अस्तित्व था। यरूशलेम और यहूदिया के मसीहियों ने अन्यजाति लोगों के साथ सुसमाचार को साझा किया था। अब इन अन्यजाति राष्ट्रों के मसीहियों ने यरूशलेम और यहूदिया में गरीब मसीहियों के साथ अपनी भौतिक संपत्ति साझा की। हालाँकि, वित्तीय योगदान की मात्रा एक स्वैच्छिक प्रकृति की थी, परन्तु इस प्रकार के प्रेम को साझा करना दुनिया के सभी मसीहियों के लिए एक दायित्व था (रोमियों 15:27)। दुनिया भर के मसीहियों को आत्मिक और साथ ही एक दूसरे के साथ भौतिक आशीषों को साझा करना चाहिए। इस स्तर पर, अन्यजाति यहूदियों के साथ अपने भौतिक साधनों को साझा करने में आभारी थे, क्योंकि सुसमाचार यहूदियों से निकला था (तुलना करें यशायाह 2:3ख; 11:1; 42:1; 60:3; यूहन्ना 4:22)। इस प्रकार प्रेरित पौलुस ने सिखाया कि यहूदी विश्वासियों और अन्यजातियों में से विश्वासियों के बीच की परस्पर निर्भरता (जैसा कि रोमियों 11 में सिखाया गया है) ठोस और व्यावहारिक भी होनी चाहिए।

रोमियों 15:28 में, पौलुस शाब्दिक रूप से कहता है, "सो मैं यह काम पूरा करके और उन को यह चन्दा सौंप कर तुम्हारे पास होता हुआ इसपानिया को जाऊंगा।" वाक्यांश "चन्दा सौंप कर (यूनानी: सफ्रेगिज़ो)" समझना कठिन है, परन्तु संभवत: इसका अर्थ है "जब मैं वह एकत्र की गई राशि उनके हाथों में सुरक्षित रूप से रख (सौंप) दूँगा।"

15:30-33

प्रश्न 5. पौलुस ने प्रार्थना की विनती क्यों की?

ध्यान दें। रोमियों 15:30 में, पौलुस कहता है, "मैं तुम से विनती करता हूँ ... कि मेरे लिए परमेश्वर से प्रार्थना करने में मेरे साथ मिलकर लौलीन रहो।" पौलुस की यह विशेषता है कि वह लोगों से उसके लिए प्रार्थना करने को कहता है। प्रार्थना *एक साथ मिलकर संघर्ष करना* है (यूनानी: सुनागोनाइज़ोमी)। यह एक *कुश्ती* है, क्योंकि मसीहियों के आसपास की दुष्ट आत्माओं, वह बुरी दुनिया जिसमें वे रहते हैं और उनमें के पापी स्वभाव द्वारा प्रस्तावित प्रतिरोध होता है। यह उन द्वारों के कारण संघर्ष है जो मसीह, मसीहियों, मसीही कलीसिया और मसीही संदेश के विरुद्ध बंद हैं। यही कारण है कि पौलुस मसीहियों को प्रार्थना करने के लिए कहता है। "प्रार्थना करें कि परमेश्वर हमारे संदेश के लिए एक द्वार खोले, ताकि हम मसीह के रहस्य को घोषित कर सकें। प्रार्थना करें कि मैं इसे स्पष्ट रूप से घोषित कर सकूं, जैसा कि मुझे करना चाहिए" (कुलुस्सियों 4:3-4)। क्योंकि प्रार्थना एक संघर्ष है, मसीही एक साथ प्रार्थना करके एक दूसरे की सहायता कर सकते हैं।

उसने विशेष रूप से यरूशलेम के लिए अपनी तत्काल यात्रा के लिए प्रार्थना की विनती की। उसने उनसे प्रार्थना करने के लिए कहा ताकि उसे यहूदिया में गैर-मसीहियों से बचाया जा सके, वे यहूदी जिन्होंने हर जगह जाकर पौलुस का विरोध किया और मसीहियों को यहूदी धर्म में वापस लाने का प्रयास किया। और उसने उनसे इसलिए प्रार्थना करने के लिए कहा कि यहूदी मसीहियों के लिए उसकी सेवा उन्हें स्वीकार्य हो। पौलुस शहादत के लिए नहीं तरसता था, परन्तु उसके पास उस संदेह के पुख्ता प्रमाण थे, जिसके साथ उसकी अन्यजातियों में सेवकाई को माना जाता था। उसने संभवत: यरूशलेम में उसके विषय में प्रसारित झूठे समाचारों के विषय में सुना होगा, कि उसने अन्यजातियों के बीच रहने वाले यहूदियों को कथित तौर पर मूसा की व्यवस्था को छोड़ने और यहूदी रीति-रिवाजों के अनुसार न जीने की शिक्षा दी थी (प्रेरितों 21:20-21))। इसलिए इस डर का कुछ आधार था कि मकदूनिया और अखया में उसकी सेवकाई के वित्तीय योगदान का यहूदिया में स्वागत नहीं किया जाएगा। सभी विरोधों के बावजूद, पौलुस ने परमेश्वर की संप्रभुता को मान्यता दी। उसने कहा, "परमेश्वर की इच्छा से मैं यह और वह करूँगा" (मत्ती 26:39; याकूब 4:13-17)। उसका मानना था कि ऐसा कुछ भी नहीं होगा जिसमें सर्वशक्तिमान परमेश्वर की अनुमति न हो! प्रेरित पौलुस ने स्वयं को और अपने जीवन की घटनाओं को पूरी रीति से प्रभु की इच्छा और बुद्धि को समर्पित कर दिया।

चरण 4. लागू करना। अनुप्रयोग

विचार करें। इन वचनों में कौन-से सत्य मसीहियों के लिए संभावित अनुप्रयोग हैं?

साझा करें और अभिलेखित करें। आइए हम एक-दूसरे के साथ विचार-मंथन करें और रोमियों 15:1-33 से संभावित अनुप्रयोगों की सूची अभिलेखित करें।

विचार करें। परमेश्वर किस संभावित अनुप्रयोग को चाहता है कि आप उसे एक व्यक्तिगत अनुप्रयोग में बदल दें?

अभिलेखित करें। इस व्यक्तिगत अनुप्रयोग को अपनी स्मरण-पुस्तक में लिख लें। अपने व्यक्तिगत अनुप्रयोग को साझा करने में स्वतंत्रता महसूस करें।

(स्मरण रखें कि प्रत्येक समूह के लोग अलग-अलग सत्य लागू करेंगे या एक ही सत्य के अलग-अलग अनुप्रयोग करेंगे। निम्नलिखित संभावित अनुप्रयोगों की एक सूची है।)

1. रोमियों 15:1-33 से संभावित अनुप्रयोगों के उदाहरण।

15:1-2. अपने आप को खुश मत करो, बल्कि विवादित मामलों के संबंध में अपने पड़ोसी के संदेहों को सहन करके उसे खुश करें और उसे तैयार करें।

15:4. पुराने नियम को पढ़ें और उसका अध्ययन करें, क्योंकि पुराने नियम में सब कुछ मसीहियों को धैर्य, धीरज और दृढ़ता सिखाने के लिए लिखा गया था। यह उन्हें उससे प्रोत्साहित करता है कि परमेश्वर ने अतीत में क्या कहा और क्या किया।

15:5. इस बात का एहसास करें कि मसीही एकता केवल तब आती है जब परमेश्वर मसीहियों को यीशु मसीह के अनुसार आपस में एकता की भावना देता है (जब कि वे उसका अनुसरण करते रहते हैं)। शिष्यत्व के बिना (परिपक्वता की ओर बढ़ते हुए) (1 कुरिन्थियों 3:3-4; इफिसियों 4:13-14) कलीसिया के भीतर एकता नहीं आएगी और अन्य कलीसियाओं के साथ भी एकता नहीं होगी।

15:7. स्वीकृति सहनशीलता के समान नहीं है। जिस तरह से यीशु मसीह ने हमें स्वीकार किया, मसीही स्वीकृति का मानक उससे कुछ कम नहीं है।

15:14. एक दूसरे को निर्देश देने के लिए कलीसिया के भीतर क्षमता विकसित करें (तुलना करें कुलुस्सियों 3:16)।

15:14-15. कभी भी अपने साथी-मसीहियों पर प्रभाव डालना बंद न करें। उनकी सच में प्रशंसा करके प्रोत्साहित करते रहें। उन्हें बार-बार परमेश्वर की कृपा स्मरण दिलाएं।

15:18. यीशु मसीह के लिए जो आपने पूरा किया है उसके बजाय यीशु मसीह ने आपके माध्यम से जो कुछ भी किया है उसके विषय में बोलकर परमेश्वर की महिमा करें।

15:19-20. पौलुस की व्यक्तिगत नीति को उस सुसमाचार को वहाँ घोषित करने के लिए आपको कभी-कभी चुनौती देने दें, जहाँ पहले किसी ने भी इसकी घोषणा नहीं की हो।

15:24. भविष्य में आप जो करना चाहते हैं, उसकी योजना बनाएँ, परन्तु हमेशा अपनी योजना को परमेश्वर को सौंपे (नीतिवचन 16:3)।

15:27. अपने साथी मसीहियों के साथ अपनी आत्मिक और साथ ही साथ भौतिक आशीषों को साझा करें, विशेषकर दुनिया के उन मसीहियों के साथ, जिन्हें इसकी सबसे अधिक आवश्यकता है।

15:30. कुछ मसीहियों के साथ उनके संघर्ष या सेवकाई में उनके लिए परमेश्वर से प्रार्थना करके जुड़ें।

2. रोमियों 15:1-33 से व्यक्तिगत अनुप्रयोगों के उदाहरण।

मैं हमारी कलीसिया में कमज़ोर मसीहियों की असफलताओं को उठाना चाहता हूँ।

मैं अपनी कलीसिया के सेवकों के साथ मजदूरों के लिए, खुले दरवाजों के लिए और खुले दिलों के लिए प्रार्थना में उनके संघर्ष में सम्मिलित होना चाहता हूँ।

चरण 5. प्रार्थना। **प्रतिउत्तर**

आइए उस एक सत्य के लिए प्रार्थना करने हेतु बारियाँ लें, जो परमेश्वर ने हमें रोमियों 15:1-33 में सिखाया है। (इस बाइबल अध्ययन के दौरान आपने जो कुछ भी सीखा है, उसका प्रार्थना में प्रतिउत्तर दें। केवल एक या दो वाक्य में प्रार्थना करने का अभ्यास करें। स्मरण रखें कि प्रत्येक समूह के लोग अलग-अलग बातों के विषय में प्रार्थना करेंगे।)

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	***[मध्यस्थता]*** **दूसरों के लिये प्रार्थना**

दो या तीन समूहों में प्रार्थना करना जारी रखें। एक दूसरे के लिये और संसार भर के लोगों के लिये प्रार्थना करें। (रोमियों 15:30; कुलुस्सियों 4:12)।

6	**तैयारी** (2 मिनट)	***[निर्धारित कार्य]*** **अगले अध्याय के लिये**

(समूह अगुवा। समूह के सदस्यों को लिखित रूप में घर पर इसकी तैयारी करने को दें या उन्हें इसकी प्रतिलिपि लेने दें)।

1. समर्पण। चेले बनाने, कलीसिया बनाने और राज्य का प्रचार करने के लिए प्रतिबद्ध हों।
2. किसी अन्य व्यक्ति या लोगों के समूह के साथ मिलकर रोमियों 15:1-33 में से प्रचार करें, शिक्षा दें या अध्ययन करें।
3. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। प्रतिदिन यहेजकेल **होशे 5, योएल 2**, **अमोस 5 और योना 1** के आधे अध्याय से परमेश्वर के साथ एक शांत समय बिताएँ। पसंदीदा सत्य विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ
4. स्मरण करना। **(20) रोमियों 16:17.** पिछले 5 स्मरण किए गए बाइबल पदों की दैनिक समीक्षा करें।
5. शिक्षा देना। मत्ती 25:31-46 में पाए जाने वाले "**भेड़ और बकरी**" **के दृष्टान्त** की तैयारी करें। दृष्टान्तों की व्याख्या करने के लिये उन छः निर्देशों का उपयोग करें।
6. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी व्यक्ति या किसी विशेष चीज के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन संहिता 5:3)।
7. परमेश्वर के राज्य के विषय पर प्रचार करने हेतु अपनी नोटबुक का अद्यतन करें। अपने शांत समय के नोट्स, अपने स्मरणीय नोट्स, अपने बाइबल के अध्ययन के नोट्स और इस तैयारी को शामिल करें।